IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

Volume 11, Issue 6, November-December 2024

Impact Factor: 7.394

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1106084

नारी मुक्ति चेतना और संघर्ष

खेमराज धोली,

हिन्दी साहित्य UGC-NET, M.Phill, M.A. हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

शोध सारांश

उत्तर आधुनिकतावाद और मीडिया ने आज नारी की स्थिति एवं भूमिका को बदल दिया है। वह अब पारम्परिक रूढ़ियों को तोड़ती हुई नई परम्परा बना रही है। आज विविध क्षेत्रों में दिनोंदिन नारी आगे बढ़ रही है।

नारी सम्बन्धी अवधारणा, चिंतन और परिकल्पनाएँ अपना स्वरूप बदल रही है। समाज का ऐसा क्षेत्र नहीं रहा जहाँ नारी उससे दूर रही है। समाज का ऐसा क्षेत्र नहीं रहा जहाँ नारी उससे दूर हो। यह नारी के लिए एक क्रांतिकारी दर्शन साबित हो रहा है, अब वो दिन दूर नहीं जब नारी अपना पृथक् शास्त्र निर्माण करेगी। नारी विमर्श का उद्‌भव नारी को मनुष्य के रूप में स्थापित करने के लिए हुआ है, जो अनेक संघर्षों को पार करके नारी विमर्श को राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने के लिए हुआ है। यदि नारी मुक्ति को सही अर्थों में ग्रहण किया जाए तो निश्चित रूप से सुखद परिणाम प्राप्त होंगे। सम्पूर्ण विश्व में नारी मुक्ति चेतना के स्वर उठने लगे है। उसका उद्देश्य अत्याचारों के प्रति विद्रोह, रूढ़ियों का खण्डन, शोषण के प्रति आवाज एवं अस्तित्व के लिए संघर्ष रहा है।

नारी का संघर्ष समाज की उस संकीर्ण मानसिकता से है जो उसे अबला, लाचार, कमजोर एवं निर्बल मानती है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री–पुरुष दोनों एक ही रथ के दो पहिये हैं जो समानान्तर तो हो सकते हैं, पर विरोधी नहीं। स्त्री की शिकायत पुरुष की मनोवृत्ति से है जिसने कभी उसे पहचाना ही हनीं।

हिन्दी महिला लेखिकाओं ने स्त्री विमर्श के लिए आवाज उठायी और उसे अपने अधिकार से जोड़ा। पुरुष समाज को चुनौति और संघर्ष के लिए आगाज करती इन लेखिकाओं ने अपना लोहा मनवाया है।

और समाज की कुंठित मानसिकता को बदलने का पूर्ण प्रयास इन्होंने अपने लेखन के माध्यम से किया है। क्योंकि पुरुष की मानसिकता सदैव स्त्री के प्रति शोषण एवं आधिपत्य रूप में रही है–पुरूष में स्त्री के गुण आ जाते हैं तो वह महात्मा बन जाता है, स्त्री में पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा बन जाती है।

Keywords: नारी विमर्श, रूढ़ियाँ, शोषण, चेतना, मुक्ति।

प्रस्तावना–

स्त्री विमर्श के अन्तर्गत नारी मुक्ति से जुड़े प्रश्न 21वीं सदी के प्रबल ज्वलंत मुद्दे हैं। वर्तमान समय में स्त्री–विमर्श विश्व पटल पर उभर रहा है। यह भूमंडलीकरण की देन है। यह प्रक्रिया विकसित राष्ट्रों से प्रारम्भ होकर विकासशील राष्ट्रों से होकर अविकसित राष्ट्रों की ओर अग्रसर है।

20वीं सदी में नारी मुक्ति संघर्ष सर्वाधिक मूलगामी और सार्वभौमिक रहा हैं यह संघर्ष जितना बाहरी पटल पर दिखाई देता उतना आन्तरिक आत्मसंघर्ष भी रहा है। यह कभी आत्मबोध, आत्म–विश्लेषण के नाम से प्रकट हुआ तो कभी आत्माभिव्यक्ति के रूप में नारी मुक्ति संघर्ष दर्शन, मनोविज्ञान, समाज विज्ञान, इतिहास और अन्य विषय की विधाओं में एकाग्र हुआ और नारी मुक्ति–संघर्ष शास्त्र का एक विकसित शास्त्र बना, जिसे समग्र रूप से नारी विमर्श कहा जाता है।

नारी विमर्श में नारी मुक्ति सर्वोपरी है। नारी मुक्ति का अर्थ नारी का पुरुष से मुक्त होना नहीं है अपितु सड़ी–गली रूढ़ियों से मानव मात्र की मुक्ति से है। इसमें पुरूष और स्त्री दोनों ही प्रभावित हैं। नारी मुक्ति एक सकारात्मक पक्ष है नकारात्मक नहीं। नारी के अस्मिता बोध के प्रति समाज की दुविधावृति का प्रश्न है। नारीत्व को त्यागना और पुरूष के समान बनना नारी मुक्ति नहीं है अपितु वह अपनी खुद की पहचान बना

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1106084

सके से है। 'नारी मुक्ति चेतना' अर्थात् नारी का अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए जागरूक होना है। अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर महिला आन्दोलन की शुरूआत 1951 से मानी जा सकती है। 1951 ई. में संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा ने भारी बहुमत से महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों का नियम पारित हुआ।

विश्व में नारी मुक्ति चेतना का प्राथमिक उद्देश्य परम्परागत मान्यताओं, रूढ़ियों एवं अत्याचारों के प्रति विद्रोह चेतना था। लेकिन भारतीय परिवेश में विद्रोह या क्रांति का स्वर नहीं रहा अपितु सहज, सुलभ नारी अधिकारों की रक्षा एवं उसकी स्वतन्त्रता रहा। भारतीय नारी वैदिक काल में पुरूषों से उच्च स्थान रखती थी, उसे देवी, माँ सहचरी रूपों में स्मरण किया जाता था।

"यत्र नार्यस्तु पूजयंते रमंते तत्र देवताः।"

परन्तु नारी पर बन्धन तब लगे जब मध्यकालीन भारतीय व्यवस्था में विदेशी आक्रमण हुए। तब भारतीय समाज और उसका सामाजिक संतुलन डगमगाने लगा। विदेशी आक्रान्ताओं से बुरी नजर का प्रभाव हमारी पूजनीय नारियों पर न पड़े के प्रतिफल उनकी शिक्षा बंद हो गई। साथ ही उनकी कुदृष्टि से बचाने हेतु बाल विवाह, बहु विवाह, परदा प्रथा आदि को प्रश्रय मिला। धीरे–धीरे शिक्षा से वंचित होने के कारण भारतीय आदर्श नारी गृहकार्यों एवं चहारदीवारी तक सीमित होकर रह गई। भारतीय इस तरह अपने अमूल्य खजाने की रक्षा में तो सफल हुए परन्तु उसकी अलौकिक आभा आज तक नहीं पा सके। नारी के संरक्षण हेतु बनाये गये बन्धन ही बाद में भारतीय नारी की नियती बन गये और इसी बहाने उसका शोषण होने लगा।

"ढ़ोल, गँवार, शुद्र, पशु, नारी ये सब ताड़न के अधिकारी।"

रामचरितमानस की उपर्युक्त चौपाई को लेकर गोस्वामीजी के प्रति साधारण मनुष्य ही नहीं, विद्वत् वर्ग में भी यह धारणा है कि तुलसी नारी निंदक थे। यह एक दुःखद व्यथा है। साधारण मनुष्य तो वही कहता है जो विद्वत वर्ग उसे बताता है अथवा कथावाचक जो व्याख्या करता है श्रोता उसे ही सत्य मानते हैं। उस पर विश्वास करते हैं। उपर्युक्त चौपाई की वस्तुतः व्याख्या ही गलत की गई प्रतीत होती है। उपर्युक्त चौपाई की पुनर्व्याख्या की जानी चाहिए ताकि तुलसीदासजी की सच्ची भावना से लोग अवगत हो तथा वे यह समझ सके कि तुलसी नारी निंदक नहीं थे।

वस्तुतः कोई भी रचनाकार जब कोई रचना करता है तो उसकी वास्तविक भावनाओं को सत्य रूप में स्वयं ही व्यक्त कर सकता है। व्याख्याकार तो अपने–अपने ढंग से उसका अर्थ लगा सकते हैं। संदर्भित चौपाई में 'ताड़न' शब्द की व्याख्याकारों ने गलत अर्थ में प्रस्तुति देते हुए इसे दण्ड (सजा) का प्रतीक मानते हुए इस चौपाई की व्याख्या की है।

जहाँ तक तुलसीदास जी के मन एवं भावना का चिन्तन किया है, मेरे मत से 'ताड़न' का तात्पर्य 'दण्ड' (सजा) नहीं होकर 'तारन' (उद्धार) से है। इस चौपाई की व्याख्या तुलसी के अनुसार तारन (उद्धार या मोक्ष) की भावना के संदर्भ में होनी चाहिए।

परन्तु ऐसा नहीं है कि समय एक स्थान पर ठहर सके। आज हम आधुनिक भारत का स्वप्न देख रहे हैं, जहाँ हम नारी को सम्मान भी देते हैं और समान भी मानते हैं।

"एक नहीं दो–दो मात्राएँ नर से भारी नारी।"

महिला लेखिकाओं ने नारी चेतना और संघर्ष को नया आयाम दिया है। सीमोन द बोडवार ने अपनी पुस्तक 'स्त्री उपेक्षिता' में नारी मुक्ति का सबसे क्रांतिकारी दर्शन प्रस्तुत हुआ है।

"स्त्री बनती नहीं, उसे बनाया जाता है, स्त्री की तरह जीना सीखाया जाता है। पुरूष प्रधान समाज में स्त्री वैसे ही बनती, जीती, मरती, पिसती, घुटती है जैसे पुरूष की इच्छा है। वह अपने ढंग से नहीं जी सकती। अपने ढंग से नहीं सोच, रच सकती। इतना ही नहीं अपने अनुभवों का प्रस्तुतीकरण नहीं कर सकती। इतना ही नहीं अपने अनुभवों का प्रस्तुतीकरण नहीं कर सकती। यदि कोई स्त्री अपने अनुभवों को जीती, मरती, पिसती, संघर्ष करती हुई कविता या कहानी, पोस्टर पेंटिंग बना देती है तो समूचे पुरूष संसार में खलबली परेशानी चिंता बढ़ जाती है कि यह क्या है? यह स्वतन्त्रता तो भयानक है।"[1]

आज प्रतिकूल स्थितियों से संघर्ष करके नारियाँ हाशिओं की दूनिया तोड़कर केन्द्र में आने लगी है। यह उसकी बौद्धिक प्रतिभा और अधिकार दोनों है।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1106084

"पुरूष इतिहासकारों ने महिला रचनाकारों के साथ बहुत अन्याय किया है। यह अन्याय उदासीनता के चलते हुआ हो, ऐसी बात नहीं, यह अन्याय विमुख रह कर किया गया है।"[2]

नारी विमर्श

'विमर्श' शब्द का अर्थ 'सोचना' या 'विचारना' से हैं। अर्थात् जो तार्किक ढंग से सोचा जाये, उसे विमर्श कहा जाता है। विमर्श विचारों का गुम्फित संग्रह है जिसमें संवेदना, परम्परा, अंतदृष्टि की अनिवार्य प्रक्रिया होती है।

आज विश्व पटल पर अनेक विषयों पर विमर्श चल रहा है–दलित विमर्श, अश्वेत विमर्श और नारी विमर्श। इनमें नारी विमर्श ज्वलंत मुद्दा है। नारी विमर्श के अन्तर्गत ही नारी चेतना एवं उसकी मुक्ति की परिकल्पना की जाती है। वैश्विक भूमण्डलीकरण में नारी विमर्श अपना पहचान बना चुका है। सभी राष्ट्रों में या तो नारी विमर्श चरम पर है या अपनी आगाज कर चुका है। इसे आन्दोलन नहीं तो उससे कम भी नहीं माना जा सकता। केवल नारी वर्ग प्रभावित हुए हो ऐसा भी नहीं है अपितु इसमें स्त्री–पुरूष दोनों प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से सम्मलित है।

दूसरे विश्वयुद्ध के उपरान्त नारी को घर की चहारदीवारी से बाहर निकलने व काम करने के अवसर उपलब्ध हुए। वह भी एक मनुष्य है अतः उन्हें भी अधिकार चाहिए, उसे भी समाज में पुरूषों के समान स्थान मिलना चाहिए, पुरूषों के समान कार्य करने की क्षमता उनमें है, ऐसे विचारों के साथ स्त्री विमर्श की भावना जागृत होने लगी।

आधुनिक पोषाक पहनना और 'फ्री सैक्स' को नारी मुक्ति नहीं कहते यह तो वासनाग्रस्त एक विचार मात्र है। सही मायने में उत्तम विचार एवं समान मैत्रीभाव का नाम नारी मुक्ति के अधिक करीब है।

नारी मुक्ति का अर्थ पुरूष के स्थान पर आरूढ़ होना भी नहीं है। वह स्त्री है स्त्री की तरह रहे अपनी पहचान बनाये, खुद के अपने गुण हो, खुद को किसी के द्वारा उपयोग न होने देना ही दरअसल पुरूष मानसिकता से मुक्ति होगी। नारी विमर्श का अर्थ परिवार तोड़ने या समाज का विघटन करने में भी नहीं लिया जाता। वह अपनी जिम्मेदारियाँ समझे क्योंकि नारी पर ही आदर्श समाज की नींव खड़ी है।

"नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास–रजत–नग–पग तल में।
पीयूष–स्रोत–सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।।"[3]

नारी विमर्श स्त्री के सकारात्मक पक्ष की पैरवी करता है वह कभी भी स्त्री–पुरूष सम्बन्धों में नकारात्मक भेदभाव के लिए स्थान रिक्त नहीं रखता अपितु आपसी समन्वय एवं सहयोग से चलने की बात चर्चा होती है। आज विश्व स्तर पर नारी विमर्श बहसों को जन्म दे रहा है। आज तक केवल पुरूष विमर्श का ही वर्चस्व रहा है, नारी विमर्श के लिए कोई जगह नहीं थी। हो भी कैसे सकती थी? उत्तर आधुनिकता ने एक सोच और समझ को जन्म दिया तब प्रखरता से आवाज उठाई जाने लगी। अल्पसंख्यक, पिछड़े, दलित आदि के संदर्भ में विचार करने का अवसर मिला तो नारी विमर्श भी अपने स्तर पर मजबूत होने लगा। नारी अस्मिता को नई राह दिखाई देने लगी और विभिन्न संगठनों और समाज में नारी उत्थान के लिए प्रयास भी तेज होने लगे और इसी क्रम में महिला लेखिकाओं ने भी स्त्री विमर्श की उद्घाटित घोषणा कर दी जो कालान्तर में अपने चरम उत्कर्ष पर है।

"हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी का प्रभुत्व। केवल अपना वह स्थान, वे स्वत्व चाहिए जिनका पुरूषों के निकट कोई उपयोग नहीं, परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन सकेंगी।"[4]

नारी विमर्श नारियाँ सक्रिय होकर लेखन कर रही हैं। उनके चिंतन में पुरूषों के स्त्री विश्लेषण को अप्रासंगिक ठहराया है। उसमें पितृसत्तात्मक राजनीतिक छाप को स्पष्ट किया गया। नारी विमर्श का केन्द्रिय विषय यही है कि पुरूष ने नारी के विषय में जो भी लिखा उस पर चिंतन आवश्यक है।

"जब मनुष्य का मूल्य आंका जाने लगा और उसके हक का सवाल उठा तो मनुष्यों को ही एक प्रजाति स्त्री के हक का सवाल भी उठा जिसे पितृ प्रधान समाज ने दोयम–दर्जे का बना दिया था। उसकी मुक्ति कामना भी जागी। नारी स्वयं जागी। उसने अपने अनुभवों पर आधारित ऐसा साहित्य रचा जो उसके प्रति बरते गये भेदभाव को दर्शाने के साथ–साथ उसकी अनुभूतियों को दर्शाने लगा, जो प्रेम, घृणा, आपसी व्यवहार,

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 6, November-December 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1106084

सेक्स के रिश्ते, विवाह के बन्धनों और दुश्मनी तथा दोस्ती में भी एक अलग अहसास की पहचान कराता है। एक औरत होने के नाते ही एक औरत साहित्यकार स्वानुभावों पर आधारित होकर अपने खुद के दृष्टिकोण से अधिक प्रामाणिक, अधिक विश्वसनीय साहित्य रचने लगी।"[5] वास्तव में पूरे विश्व में सभ्यता का विकास, समाज का विकास, स्त्री के दमन का, शोषण का इतिहास रहा है लेकिन शोषण का यह इतिहास अदृश्य रहा है, उसको पितृसत्तात्मक धरोहरों के रक्षकों ने परम्परा, संस्कृति के धागों में ऐसा पिरोया कि सभ्यता तो दिखी लेकिन शोषण को सभ्यता की चाशनी में लपेटकर सामने आने से रोक दिया गया।

स्त्रियों को विवाह के बंधन में बांधकर ही सुरक्षित जीवन मिल सकता था। ना उनको सम्पत्ति का अधिकार था और ना अपने संतानों पर, यहाँ तक कि 17–18वीं सदी तक तो स्त्री आजादी पर बहस भी पुरूष ही करते थे। स्त्री को अपनी बात सार्वजनिक मंच पर कह पाने का अधिकार ना था। स्त्रियों को मिले इस दोयम दर्जे का आधार थी उनके कम शक्तिशाली होने की अवधारणा और इस अवधारणा को दीर्घायु बनाये रखने के लिए आवश्यक था धार्मिक व सामाजिक मान्यताओं व परम्पराओं द्वारा ऐसा माहौल बना देना कि ये तथ्य प्राकृतिक अथवा वास्तविक लगे और परम्पराओं ने अपना फर्ज बखूबी निभाया, आज तक निभाती चली आ रही हैं।

यौन सम्बन्धों को नियंत्रित करने के लिए बनायी गयी परम्पराएँ स्त्री को नियंत्रित करने का प्रयास था जिसे वैवाहिक सम्बन्धों का नाम देकर संस्कार बना दिया लेकिन अभी भी पुरुषों ने अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखना बंद नहीं किया अन्यथा वेश्यावृत्ति का अस्तित्व नहीं रहता। लेकिन चूंकि महिलाएँ एक व्यक्ति से ही सम्बन्ध रखने की परम्परा को तोड़ रहीं थी। अतः वेश्यावृत्ति करने वाली महिलाओं का दर्जा निम्न स्तर का कर दिया गया, न केवल समाज की व्यवस्था की नजर में बल्कि कानून और महिलाओं की स्वयं की नजर में भी।[6]

व्यावहारिक तौर पर यह कहना उचित होगा कि आधुनिक महिला का जहाँ अपनी देह के प्रति मोह बढ़ा है वहीं उसका कार्यक्षेत्र भी बढ़ा है। इस बढ़ते दायरे की भागदौड़ से निपटने में कैसी परम्पराएँ और कैसी रूढ़ियाँ? ये रूढ़ियाँ और परम्पराएँ तब तक हावी हैं जब तक महिलाएँ मानसिक रूप से स्वतन्त्र नहीं हो जाती। जब तक वे खुद का रोल मॉडल खुद नहीं बन जाती। एक बार महिला को स्वयं के 'स्व' का अहसास हो जायेगा तो सारी परम्पराओं की बेड़ियाँ टूट जायेगी और साथ ही टूट जायेगा 'दिमागी बधियाकरण का वह अध्याय जिसको भय व असुरक्षा के बोझ के कारण वह जलती आ रही है। स्वयं की ऊर्जा से परिचित महिला जब स्वयं की तलाश में निकलेगी तब वह अपनी तमाम शक्तियाँ, अपना भला–बुरा स्वयं के नजरिये से देख सकेगी और इस तरह अंत में एक ऐसा समय आयेगा जब महिला स्वतन्त्र होगी, पूर्णतः स्वतन्त्र परम्पराओं के बोझ से, पितृसत्तात्मक वर्चस्व से, मानसिक दबाव से और समाज के बंधनों से। इस अवस्था में बराबरी होगी स्त्री और पुरुष की, उनकी इच्छाओं–आकांक्षाओं की, समाज में उनकी प्रस्थिति की और यह सब संभव है स्वयं स्त्री के प्रयत्नों से, परम्पराओं के पिंजरे तोड़ संभावनाओं के आकाश में परवाज करने से। यह करना होगा क्योंकि ये समय की आवाज है और महिलाओं की जरूरत भी।[7]

अब नारियाँ पुरूषवादी वर्चस्ववाद को तोड़ने के लिए स्त्री अनुभवों को प्रकट एवं अभिव्यक्त करने लगी है। इनमें जागृति और जागरूकता बढ़ने लगी है।

सन्दर्भ सूची

1. नारीवादी विमर्श, राकेश कुमारः पृ. 102.
2. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहासः सुमन राजे–पृ. 11.
3. कामायनी (लज्जा सर्ग): जयशंकर प्रसाद
4. नारीवादी विमर्शः राकेश कुमार, पृ. 178.
5. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहासः सुमन राजे–पृ. 307.
6. आधी आबादी का संघर्ष–ममता जैमनी, श्री प्रकाश शर्मा, 2011, पृ. 25.
7. स्त्री परम्परा और आधुनिकता–राजकिशोर, पृ. 310.

IJARETY

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
doi crossref
निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975 Impact Factor: 7.394

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com